रमेश गोहे की कविता

मेरी शर्ट का रंग

एक समय था जब मेरे पास नीली शर्ट नहीं थी,
और अब मेरे पास पीली शर्ट नहीं है,
वैसे तो मेरे पास अब हरी शर्ट भी नहीं है,
पर हरी शर्ट बहुत पहनी है मैंने,
वैसे तो सभी रंग पसंद हैं मुझे,
पर मेरे पास अब सिर्फ,
नीली, मटमैली और धूसर रंग की शर्ट ज्यादा हैं।
अरे सफेद शर्ट के बारे में तो बताना ही भूल गया मैं,
बचपन में शर्ट का मतलब ही होता था सफेद शर्ट,
और कोई दूसरे रंग की कल्पना भी नहीं करते थे हम लोग,
पिताजी का कुर्ता-पायजामा दोनों भी सफेद ही हुआ करते थे,
दादा और नाना की धोती भी सफ़ेद ही हुआ करती थी
और हाँ हम सभी के शर्ट भी सफेद होते थे,
कितना साथ दिया है इस सफेद रंग ने,
कोई भी इंटरव्यू आया कि सिलवा ली एक सफेद शर्ट,
इतना पहना है पर सफेदी का आकर्षण कभी खत्म नहीं होता।
हो भी कैसे, यही रंग तो जाएगा,
अंत तक साथ निभाएगा।
अंतिम यात्रा में सफेद कफ़न ही ओढ़ाया जायेगा।
ओहो कहां मौत के बारे सोचने लगा मैं,
अच्छा भला शर्ट की बात कर रहा था कि
मेरे पास अब किन रंगों की शर्ट हैं,
और कितने रंग पसंद हैं मुझे।
मिंत्रा पर कितनी रंग-बिरंगी,
इंद्रधनुषी शर्ट्स पसंद कर रखी हैं मैंने,
28,
जी हां कार्ट में लगभग 28 शर्ट पसंद कर रक्खी हैं मैंने मिंत्रा पर,
लेकिन मैं बताना चाहता हूँ कि मुझे,
इससे भी ज्यादा पसन्द आती हैं फ्रैंचक्राउन की शर्ट्स,
जो सबसे अलग और ज्यादा चमकदार होती हैं,
हाँ,
पर फ्रैंच क्राउन के कार्ट में एक भी शर्ट नहीं है मेरे पास,
वहां शर्ट की कीमत कभी भी दो हजार से कम नहीं होती,
बल्कि इसी रेंज से शुरू होती है कीमत,
और पहुंच जाती है लाखों रुपए पर।
सोचिये,
कोई लाख रुपए की शर्ट पहनता होगा,
तो कैसा दिखता होगा?
लाखों का कोट पहनता होगा तो?
नहीं नहीं कोट पर मत सोचिए,
अपना मुद्दा शर्ट है कोट नहीं।
तलाशिए किसी ऑनलाइन एप पर आप भी
'बाय वन-गेट वन फ्री' वाली शर्ट।
हाँ पर मैंने देखा है
कि एक अच्छी, महंगी और चमकदार शर्ट पहनने पर
उनके हंसने का उत्साह और बढ़ जाता है,
दांत और ज्यादा सुंदर लगने लगते हैं।
सिर और दाढ़ी की सफेदी पर लोगों का ध्यान,
थोड़ा कम जाता है,
नए लोग उनको अमीर समझते हैं,

हां किराने वाला दुकानदार,
नई शर्ट देखकर,
पिछले महीने की उधारी जरूर याद दिला देता है।
कहता है सर पिछला हिसाब कर देते तो अच्छा रहता,
और मन ही मन कहता है,
नई शर्ट पहनने के लिए पैसे हैं इनके पास,
और नमक तेल उधारी में चल रहा है।
कैसे कैसे लोग हैं,
घर में बोरा-टाट और बाहर टेरी-कॉट,
वैसे यह कहावत 100 साल पुरानी हो गई है ।
अब टेरीकॉट नहीं कॉटन वालों से जलते हैं लोग,
किसी भी शर्ट पर लिखा रहता है अब 100% कॉटन,
वही वाला कॉटन जिसके खेत विदर्भ में मिलते हैं,
झक्क सफेद दिखने लगते हैं खेत में जब,
कपास के फल फट कर खुल जाते हैं,
कपास आंख खोलकर बाहर झांकने लगता है।
और,
जब,
कपास बाहर झांकने लगता है,
तब,
किसान को रात-रात भर नींद नहीं आती।
उसे सताने लगता है किसी अनहोनी का भय
हर पल उसे लगता है कि,
काले-काले बादल घुमड़कर आ रहे हैं,
अब बस बरसने ही वाले हैं,
और उसके खेतों में बरस कर कपास को गिला कर देंगे।
काला कर देंगे उसका सारा सफेद कपास,
उसी क्षण उसे सताने लगता है,
कर्ज वापस नहीं कर पाने का खतरा।
वह अचानक से हड़बड़ा कर उठता है,
बाहर आकर आसमान में देखता है,
आसमान में खिले दिखते हैं चटक तारे,
तब वह आकर चैन की सांस लेता है,
और सोता है।
सबेरे अखबार में पढ़ता है,
कि रामराव के खेत में किसी ने लगा दी है आग,
उसके कपास के खेत जलकर खाक हो गए हैं,
उसे सताने लगता है एक अनजाना भय,
और उसका चेहरा धीरे-धीरे पड़ने लगता है काला।
अपने खेत के कपास जल जाने के भय का धुंआ,
धीरे-धीरे उसके चेहरे को कर देता है बदरंग।
ओहो कितनी लंबी है,
झक्क सफेद कॉटन के शर्ट की कहानी,
जी हाँ सफेद सोना उगाने वाले किसान,
भय के मारे काले पड़ जाते हैं,
तब जाकर निखरता है सफेद सोना और ज्यादा।
कितने किसान मर जाते हैं,
सफेद सोने की कीमत पाने से पहले ।

जी हाँ मैं बता रहा था कि,
एक समय था जब मेरे पास नीली शर्ट नहीं थी,
और अब मेरे पास पीली शर्ट नहीं है,
वैसे तो मेरे पास अब हरी शर्ट भी नहीं है,
पर हरी शर्ट बहुत पहनी है मैंने,
वैसे तो सभी रंग पसंद हैं मुझे,
पर मेरे पास अब सिर्फ,
नीली, मटमैली और धूसर रंग की शर्ट ज्यादा हैं।
सफ़ेद शर्ट पहनते ही याद आने लगती हैं,
मुझे विदर्भ के किसानों की मौतें,
और मैं थोड़ा गमगीन होने लगता हूँ सफ़ेद शर्ट पहनकर,
वैसे तो सारे कपड़े कपास से ही बनते हैं।
रंग कोई भी हो,
कपास तो किसान का ही होता है। स्व